

कृत्तिकासुत पुं. (तत्.) दे. कृत्तिकातनय।

कृत्तिवास पुं. (तत्.) दे. कृत्तिवासा।

कृत्तिवासा पुं. (तत्.) शिव, गजासुर का वध कर उसकी खाल ओढ़ने वाले महादेव।

कृत्य पुं. (तत्.) कर्तव्य कर्म, वेदविहित आवश्यक कार्य 2. अभिचार 3. काम, कर्म 4. जादू।

कृत्याकृत्य वि. (तत्.) करने और न करने योग्य काम, भला और बुरा काम।

कृत्यादूषण पुं. (तत्.) कृत्या के प्रतिकार के लिए किया जाने वाला एक विशेष कृत्य।

कृत्रिम वि. (तत्.) 1. जो असली न हो, नकली, बनावटी, जाली 2. बारह प्रकार के पुत्रों में से एक, जिसे धन-संपत्ति का लोभ दिखाकर पुत्रवत् अपने साथ रखा जाए।

कृत्रिमवन पुं. (तत्.) उपवन, उद्यान।

कृत्स्न वि. (तत्.) संपूर्ण, सब, पूरा।

कृदंत पुं. (तत्.) वह शब्द जो धातु (के अंत) में कृत् प्रत्यय लगाने से बने जैसे- पाचक, नंदन, भुक्त, भोक्ता।

कृप पुं. (तत्.) 1. वैदिक काल के एक ऋषि का नाम 2. दे. 'कृपाचार्य'।

कृपण पुं. (तत्.) 1. अनुदार या सूम व्यक्ति 2. एक प्रकार का कीट 3. बुरी हालत, दुर्दशा।

कृपणता स्त्री. (तत्.) 1. कंजूसी 2. दीनता, दैन्य।

कृपणधी वि. (तत्.) क्षुद्रबुद्धि।

कृपया क्रि.वि. (तत्.) कृपापूर्वक, अनुग्रहपूर्वक जैसे- कृपया यहाँ न थूकें।

कृपा स्त्री. (तत्.) 1. बिना किसी प्रतिकार की आशा के दूसरे की भलाई करने की इच्छा या वृत्ति, दया, अनुग्रह 2. क्षमा, माफी जैसे- मेरे अवगुण न देखो, कृपा करो।

कृपाचार्य पुं. (तत्.) गौतम के पौत्र और शरद्वत के पुत्र, अश्वत्थामा के मामा, कौरवों-पांडवों के गुरु।

कृपाण पुं. (तत्.) 1. तलवार 2. कटार 3. दंडक वृत्त का एक भेद जिसमें 32 वर्ण होते हैं।

कृपाणी स्त्री. (तत्.) 1. छोटी तलवार 2. कैंची, कतरनी 3. कटारी या बरछी।

कृपादृष्टि स्त्री. (तत्.) दया की दृष्टि।

कृपापात्र पुं. (तत्.) वह व्यक्ति जिस पर कृपा हो, कृपा का अधिकारी, कृपा का पात्र।

कृपाभाजन पुं. (तत्.) दया का पात्र।

कृपायतन पुं. (तत्.) दया के निवास, दयालु।

कृपालु वि. (तत्.) कृपा करने वाला प्रयो. श्री रामचंद्र कृपालु भजु मन, हरणभवभयदारुणम् - तुलसी।

कृपालुता स्त्री. (तत्.) दया का भाव, मेहरबानी।

कृपासिंधु वि. (तत्.) दयानिधि, अकारण कृपा करने वाला 2. परमेश्वर प्रयो. बंदऊ गुरुपद कंज, कृपासिंधु नररूप हरि -तुलसी।

कृपी स्त्री. (तत्.) कृपाचार्य की बहन जो द्रोणाचार्य को ब्याही थी और अश्वत्थामा की माता थी।

कृपीसुत पुं. (तत्.) अश्वत्थामा।

कृमि पुं. (तत्.) 1. क्षुद्र कीट, छोटा कीड़ा 2. हिरमिजी कीड़ा या मिट्टी, किरमिजी 3. लाह 4. गधा 5. मकड़ा।

कृमिकोश पुं. (तत्.) रेशम के कीड़े का घर, कोया, ककून, कुसवारी।

कृमिरोग पुं. (तत्.) आमाशय और पक्वाशय में केंचुए या कीड़े उत्पन्न होने का रोग।

कृश वि. (तत्.) 1. दुबला पतला, क्षीण 2. गरीब, नगण्य 3. अल्प, छोटा।

कृशता स्त्री. (तत्.) 1. दुबलापन, दुर्बलता, क्षीणता 2. अल्पता, सूक्ष्मता, कमी।

कृशत्व पुं. (तत्.) 1. क्षीणता, दुबलापन 2. अल्पता, सूक्ष्मता।

कृशन पुं. (तत्.) 1. मुक्ता, मोती 2. सोना, हिरण्य 3. आकार, आकृति, गठन।